महिन्द्रा यूनाइटेड वर्ल्ड कॉलेज ऑफ इंडिया पर प्रधानमंत्री का भाषण

9 फरवरी, 2008

मैं यहाँ महिन्द्रा यूनाइटेड वर्ल्ड कॉलेज ऑफ इंडिया में आकर बहुत खुश हूँ। मैं इस महत्वपूर्ण संस्था के निर्माण की पहल करने के लिए अपने मित्र केशव महिन्द्रा और उनके मित्रों तथा सहयोगियों की सराहना करता हूँ। मेरा मानना है कि आपने वैश्विक ज्ञान नेटवर्क पर अपने लिए पहले ही स्थान पक्का कर लिया है और आपके कई छात्र विश्व के कुछ सर्वोत्तम संस्थाओं में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं।

मैं छात्रों और शिक्षकों के कठिन प्रयासों और लगन की सराहना करना चाहूँगा। ज्ञान के इस अत्यन्त प्रतियोगी दुनियां में हमारे छात्रों की उपलब्धियों से मुझे बहुत संतोष मिलता है। भारतीय व्यवसाय द्वारा वैश्विक चुनौतियों का सामना करने में रूचि दिखलाने से काफी पहले ही भारतीय छात्र ऐसा करना चाहते थे।

याद कीजिए कि कैसे हमारे पूर्व राष्ट्रपति के आर नारायनन एक गरीब और साधनहीन पृष्ठभूमि के होते हुए भी ब्रिटिश राज के दौरान ब्रिटेन गए और अपनी पढ़ाई प्रशंसनीय ढंग से पूरी की। उन्होंने कभी भी समान अवसर (lavel playing field) की मांग नहीं की। उन्होंने हम में से हजारों लोगों की ही तरह, जो गांव के स्कूलों में जाते हैं और छात्रवृत्ति प्राप्त करने के लिए कड़ी प्रतिस्पर्धा करते हैं, आगे बढ़े और हमारी प्रतिभा को उन लोगों के सामने साबित किया जो सभी साधनों से सम्पन्न वातावरण में पलते बढ़ते हैं।

विगत वर्षों में हमने साधारण सामाजिक और आर्थिक पृष्ठभूमि से आए लड़के और लड़कियों को देखा है जो उच्चतर शिक्षा की हमारी संस्थाओं से निकलते हैं और विश्व की सर्वश्रेष्ठ संस्थाओं में प्रवेश पाते हैं। हमारे युवाओं ने ही दुनियां भर में भारत की छवि को निखारा है। डॉक्टर, वैज्ञानिक, इंजीनियर, संगीतज्ञ, शिक्षक, बैंकर जैसे व्यावसायों में भारतीयों ने असमान अवसरों के बावजूद कड़ी चुनौतियों का सामना किया है और बेहतर प्रदर्शन किया है।

मुझे विश्वास है कि इस संस्था के छात्र भी हमें गौरवान्वित करेंगे। ऐसा करने में वे हमारे व्यावसायिक अग्रजों के लिए उदाहरण बनेंगे जिन्हें असमान अवसरों के बावजूद प्रतिस्पधा करना और अपनी प्रतिभा को साबित करना सीखना होगा जैसा कि आप करते हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि वास्तव में ऐसा कोई भी खेल नहीं है जो कि हमेशा समान

अवसर वाले मैदानों पर खेला जाता हो। खेले जाने वाले मैदान भिन्न-भिन्न प्रकार के होते हैं, जैसा कि कोई भी क्रिकेटर आपको बता सकता है। लेकिन वे चुपचाप नहीं बैठ जाते और अपनी पसंद के मैदान और पिच की मांग नहीं करते बल्कि जो भी पिच उन्हें दिया जाता है वे उस पर खेलना सीखते हैं और विपक्षी दल को हराने की कोशिश करते हैं।

मुझे आशा है कि मेरे दोस्त केशव यही संदेश यहां उपस्थित प्रत्येक छात्र को देना चाहेंगे। वैश्वीकरण के युग में उनकी अपनी कंपनी ने अच्छा प्रदर्शन किया है और मैं उनकी तथा आनन्द की उनकी रचनात्मकता, उनके उद्यम और उनकी प्रवृत्ति के लिए सराहना करता हूँ। कठिन परिश्रम का फल मिलता है, उद्यम का भी फल मिलता है इसलिए नौजवान दोस्तों, मैं आप में से प्रत्येक से आग्रह करता हूँ कि आप इन दोनों बातों पर ध्यान दें।

हमारी सरकार ने हमारे देश में प्रत्येक बच्चे के लिए प्रारंभिक शिक्षा उपलब्ध कराने हेतु एक महत्वकांक्षी योजना की शुरुआत की है। हमने एक पंचवर्षीय योजना प्रारंभ की है जिसे मैंने शिक्षा में किए जा रहे सार्वजनिक निवेश के कारण 'राष्ट्रीय शिक्षा योजना' कहा है। शिक्षा पिरामिड के प्रत्येक सोपान पर हमारी शिक्षा प्रणाली को निवेश और सुधार दोनों की तत्काल जरूरत है।

हमें 21वीं शताब्दी के लिए एक आधुनिक शिक्षा प्रणाली की जरूरत है। एक ऐसी प्रणाली जो हमारे प्रत्येक बच्चे को भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करेगी न कि उन्हें विगत के बन्धनों में उलझाए रखेगी। हमें एक ऐसी प्रणाली की जरूरत है जो दयावान और अपेक्षा करने वाला दोनों प्रकार का हो। किसी भी बच्चे को ऐसा नहीं लगना चाहिए कि उसे गलती न करने पर भी बाहर निकाल दिया गया है। किसी भी बच्चे में ऐसी शिकायत बनी नहीं रहनी चाहिए कि उसकी रचनात्मकता को दबा दिया गया है। कोई भी बच्चा ऐसा कभी न समझे कि उसे ऐसा कार्य करने को मजबूर किया गया है जो वह करने के लिए सभी प्रकार से सज्जित नहीं है। हमें एक उदार शिक्षा प्रणाली की जरूरत है। हमें एक रचनात्मक और प्रगतिशील प्रणाली की भी जरूरत है।

हालांकि हमारी सरकार सभी की शिक्षा तक "पहुँच" में सुधार करने पर बहुत जोर दे रही है फिर भी मैं अपने शिक्षकों से यह भी आग्रह करना चाहूँगा कि वे रचनात्मकता और उत्कृष्टता दोनों पर समान रूप से ध्यान दें। हरेक कक्षा के किसी कोने में एक सी.वी.रमन, एक जगदीशचन्द्र बोस, एक हरगोविन्द खुराना और एक अब्दुस सलाम अपनी योग्यता पहचाने जाने का इंतजार कर रहा है।

हाल ही में मैंने भारतीय गणितज्ञ प्रो.एस.आर.आर. बर्धन की सराहना की जब उन्होंने गणित में सर्वोच्च सम्मान, The Abel Award जिसे गणित का नोबेल कहा जाता है, प्राप्त किया। उन्होंने मेरे पत्र का जबाव दिया और कहा कि अपने कार्य में वह जो कुछ करने में समर्थ हुए वह चेन्नई और कोलकाता में स्कूल और कॉलेज में प्राप्त अच्छे प्रशिक्षण के कारण संभव हुआ। यह भारत में रखी गई नींव है जिसने उन्हें विश्व भर में पहचान दिलाई। मैं आशा करता हूँ कि आप में से प्रत्येक छात्र ऐसे ही दृढ़ नींव के साथ इस स्कूल से निकलेगा। और, मुझे आशा है कि आपने जो सफलता प्राप्त की है, उसके लिए जो कुछ भी अपने माता-पिता से, अपने शिक्षकों से और अपने विद्यालय से प्राप्त किया है उसे आप कभी नहीं भूलेंगे। आपने दुनिया में जो स्थान हासिल किया है उसमें भारत के एक छोटे अंश को ही सही, अपनी आत्मा और दिमाग में बने रहने की अनुमति दें।

मुझे खुशी है कि आपके कैंपस में हमारा आना एक वन-विहार जैव-विविधता पार्क और अभ्यारण्य के उद्‌घाटन से जुड़ा हुआ है। मैं आशा करता हूँ कि यह पार्क और अभ्यारण्य इस वैसी दुनिया में शांति और प्राकृतिक सुन्दरता के उद्यान के रूप में विकसित होगा जहां हरे-भरे स्थान उत्तरोत्तर दुर्लभ होते जा रहे हैं। अब जबकि वैश्विक तापमान के बढ़ने का खतरा हमारे ऊपर मंडरा रहा है, इस प्रकार के रचनात्मक कार्य समय की मांग हैं। वन-विहार जैसी अनोखे और अद्वितीय परियोजना विकसित करने की पहल करके आप छात्रों ने यह दिखलाया है कि आने वाली पीढ़ियां अपने बाद आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारे नाजुक पर्यावरण की रक्षा करने और उसे बनाए रखने में हमसे ज्यादा सामर्थ्यवान है।

हम भारतीय सतत् विकास के प्रति प्रतिबद्ध हैं। हमारी सरकार, वनों के कम होते जाने और कार्बन उत्सर्जन की चुनौतियों का सामना करने के लिए जिस भी पहल की जरूरत होगी, करेगी। हमारे लोगों ने सदियों से अपनी प्रकृति माता की पूजा की है। हम सूर्य देवता, जल देवता की पूजा करते हैं। हम अपनी नदियों का नाम अपनी देवी और देवताओं के नाम पर रखते हैं। पर्यावरण का सम्मान करना हमारा धर्म है। मुझे आशा है कि आप इस बड़ी दुनिया में आगे जाएंगे और ऐसे मूल्य आपके अंदर हमेशा बने रहेंगे। मैं एक बार फिर केशव और इस संस्था से जुड़े सभी लोगों की सराहना करता हूँ। ईश्वर करे आपकी तरह के लोग आगे बढ़ें और फलें फूलें।

धन्यवाद ।

******